يَعۡلَمُ غَيۡبَ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيۡرٌۢ بِمَا تَعۡمَلُوۡنَ ﴿۱۸﴾
जानता है आस्मानों और ज़मीन के सब ग़ैब और अल्लाह तुम्हारे काम देख रहा है[45]

اٰیاتها ٤٥ | ٥٠ سُوۡرَةُ قٓ مَكِّيَّةٌ ٣٤ | رکوعاتها ٣

सूरए قٓ मक्किय्या है, इस में पेंतालीस आयतें और तीन रुकूअ़ हैं

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ
अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

قٓ ۚ وَالۡقُرۡاٰنِ الۡمَجِيۡدِ ۚ﴿۱﴾ بَلۡ عَجِبُوۡۤا اَنۡ جَآءَهُمۡ مُّنۡذِرٌ مِّنۡهُمۡ فَقَالَ
इ़ज़्ज़त वाले क़ुरआन की क़सम[2] बल्कि उन्हें इस का अचम्बा (तअ़ज्जुब) हुवा कि उन के पास उन्ही में का एक डर सुनाने वाला तशरीफ़ लाया[3] तो

الۡكٰفِرُوۡنَ هٰذَا شَىۡءٌ عَجِيۡبٌ ۚ﴿۲﴾ ءَاِذَا مِتۡنَا وَكُنَّا تُرَابًا ۚ ذٰلِكَ رَجۡعٌۢ
काफ़िर बोले येह तो अ़जीब बात है क्या जब हम मर जाएं और मिट्टी हो जाएंगे फिर जियेंगे यह पलटना

بَعِيۡدٌ ﴿۳﴾ قَدۡ عَلِمۡنَا مَا تَنۡقُصُ الۡاَرۡضُ مِنۡهُمۡ ۚ وَعِنۡدَنَا كِتٰبٌ
दूर है[4] हम जानते हैं जो कुछ ज़मीन उन में से घटाती है[5] और हमारे पास एक याद रखने वाली

حَفِيۡظٌ ﴿۴﴾ بَلۡ كَذَّبُوۡا بِالۡحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمۡ فَهُمۡ فِىۡۤ اَمۡرٍ مَّرِيۡجٍ ﴿۵﴾ اَفَلَمۡ
किताब है[6] बल्कि उन्हों ने ह़क़ को झुटलाया[7] जब वोह उन के पास आया तो वोह एक मुज़्तरिब बे सबात बात में हैं[8] तो क्या

يَنۡظُرُوۡۤا اِلَى السَّمَآءِ فَوۡقَهُمۡ كَيۡفَ بَنَيۡنٰهَا وَزَيَّنّٰهَا وَمَا لَهَا مِنۡ فُرُوۡجٍ ﴿۶﴾
उन्हों ने अपने ऊपर आस्मान को न देखा[9] हम ने उसे कैसा बनाया[10] और संवारा[11] और उस में कहीं रख़्ना नहीं[12]

45 : उस से तुम्हारा कोई ह़ाल छुपा नहीं न ज़ाहिर न मख़्फ़ी। **1 :** ''सूरए قٓ'' मक्किय्या है, इस में तीन रुकूअ़, पेंतालीस आयतें, तीन सो सत्तावन कलिमे और एक हज़ार चार सो चोरानवे ह़र्फ़ हैं। **2 :** हम जानते हैं कि कुफ़्फ़ारे मक्का सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَسَلَّم पर ईमान नहीं लाए। **3 :** जिस की अ़दालत व अमानत और सिद्क़ व रास्त बाज़ी को वोह ख़ूब जानते हैं और येह भी उन के दिल नशीन है कि ऐसे सिफ़ात का शख़्स सच्चा नासेह होता है बा वुजूद इस के उन का सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَسَلَّم की नुबुव्वत और हुज़ूर के इन्ज़ार (डराने) से तअ़ज्जुब व इन्कार करना क़ाबिले ह़ैरत है। **4 :** उन की इस बात के रद व जवाब में अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है : **5 :** या'नी उन के जिस्म के जो ह़िस्से गोश्त ख़ून हड्डियां वग़ैरा ज़मीन खा जाती है, उन में से कोई चीज़ हम से छुपी नहीं तो हम उन को वैसे ही ज़िन्दा करने पर क़ादिर हैं जैसे कि वोह पहले थे। **6 :** जिस में उन के अस्मा आ'दाद और जो कुछ उन में से ज़मीन ने खाया सब साबित व मक्तूब व मह़फ़ूज़ है। **7 :** बिग़ैर सोचे समझे और ह़क़ से मुराद या नुबुव्वत है जिस के साथ मो'जिज़ाते बाहिरात हैं या क़ुरआने मजीद। **8 :** तो कभी नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَسَلَّم को शाइ़र, कभी साह़िर, कभी काहिन और इसी त़रह़ क़ुरआने पाक को शे'र व सेह़र व कहानत कहते हैं किसी एक बात पर क़रार नहीं। **9 :** चश्मे बीना व नज़रे ए'तिबार से कि इस की आफ़रीनिश में हमारी क़ुदरत के आसार नुमायां हैं। **10 :** बिग़ैर सुतून के बुलन्द किया **11 :** कवाकिब के रोशन अजराम से। **12 :** कोई ऐ़ब व क़ुसूर नहीं।

وَالْاَرْضَ مَدَدْنٰهَا وَاَلْقَيْنَا فِيْهَا رَوَاسِيَ وَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍۢ

और ज़मीन को हम ने फैलाया[13] और उस में लंगर डाले[14] और उस में हर बा रौनक़

بَهِيْجٍۙ ﴿٧﴾ تَبْصِرَةً وَّذِكْرٰى لِكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيْبٍ ﴿٨﴾ وَنَزَّلْنَا مِنَ السَّمَآءِ

जोड़ा उगाया सूझ और समझ[15] हर रुजूअ़ वाले बन्दे के लिये[16] और हम ने आस्मान से बरकत वाला

مَآءً مُّبٰرَكًا فَاَنْۢبَتْنَا بِهٖ جَنّٰتٍ وَّحَبَّ الْحَصِيْدِۙ ﴿٩﴾ وَالنَّخْلَ بٰسِقٰتٍ لَّهَا

पानी उतारा[17] तो उस से बाग़ उगाए और अनाज कि काटा जाता है[18] और खजूर के लम्बे दरख़्त जिन का

طَلْعٌ نَّضِيْدٌۙ ﴿١٠﴾ رِّزْقًا لِّلْعِبَادِۙ وَاَحْيَيْنَا بِهٖ بَلْدَةً مَّيْتًاؕ كَذٰلِكَ

पक्का गाभा (पका हुवा ताज़ा फल) बन्दों की रोज़ी के लिये और हम ने उस[19] से मुर्दा (वीरान) शहर जिलाया (सर सब्ज़ किया)[20] यूंही

الْخُرُوْجُ ﴿١١﴾ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّاَصْحٰبُ الرَّسِّ وَثَمُوْدُ ﴿١٢﴾ وَ

क़ब्रों से तुम्हारा निकलना है[21] इन से पहले झुटलाया[22] नूह़ की क़ौम और रस्स वालों[23] और समूद और

عَادٌ وَّفِرْعَوْنُ وَاِخْوَانُ لُوْطٍۙ ﴿١٣﴾ وَّاَصْحٰبُ الْاَيْكَةِ وَقَوْمُ تُبَّعٍؕ كُلٌّ

आ़द और फ़िरऔ़न और लूत़ के हम क़ौमें और बन वालों और तुब्बअ़ की क़ौम ने[24] उन में हर

كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ وَعِيْدِ ﴿١٤﴾ اَفَعَيِيْنَا بِالْخَلْقِ الْاَوَّلِؕ بَلْ هُمْ

एक ने रसूलों को झुटलाया तो मेरे अ़ज़ाब का वा'दा साबित हो गया[25] तो क्या हम पहली बार बना कर थक गए[26] बल्कि वोह

فِيْ لَبْسٍ مِّنْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ ﴿١٥﴾ وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ وَنَعْلَمُ مَا ع

नए बनने से[27] शुबे में हैं और बेशक हम ने आदमी को पैदा किया और हम जानते हैं जो

13 : पानी तक। **14 :** पहाड़ों के कि क़ाइम रहे। **15 :** कि इस से बीनाई व नसीहत हासिल हो **16 :** जो **अल्लाह** तआ़ला के बदाइए सन्अ़त व अ़जाइबे ख़ल्क़त में नज़र कर के उस की त़रफ़ रुजूअ़ करे। **17 :** या'नी बारिश जिस से हर चीज़ की ज़िन्दगी और बहुत ख़ैरो बरकत है। **18 :** त़रह त़रह का गेहूं, जव, चना वग़ैरा। **19 :** बारिश के पानी **20 :** जिस के नबातात ख़ुश्क हो चुके थे फिर उस को सब्ज़ा ज़ार कर दिया। **21 :** तो **अल्लाह** तआ़ला की क़ुदरत के आसार देख कर मरने के बा'द फिर ज़िन्दा होने का क्यूं इन्कार करते हो। **22 :** रसूलों को **23 :** रस्स एक कूंवां है जहां येह लोग मअ़ अपने मवेशियों के मुक़ीम थे और बुतों को पूजते थे, येह कूंवां ज़मीन में धंस गया और उस के क़रीब की ज़मीन भी, येह लोग और उन के अम्वाल उस के साथ धंस गए। **24 :** इन सब के तज़्किरे सूरए फ़ुरक़ान व ह़जर व दुख़ान में गुज़र चुके हैं। **25 :** इस में क़ुरैश को तहदीद और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की तसल्ली है कि आप क़ुरैश के कुफ़्र से तंगदिल न हों हम हमेशा रसूलों की मदद फ़रमाते और उन के दुश्मनों पर अ़ज़ाब करते रहे हैं। इस के बा'द मुन्किरीने बअ़्स के इन्कार का जवाब इर्शाद होता है **26 :** जो दोबारा पैदा करना हमें दुश्वार हो, इस में मुन्किरीने बअ़्स के कमाले जहल का इज़्हार है कि बा वुजूद इस इक़रार के कि ख़ल्क़ **अल्लाह** तआ़ला ने पैदा की इस के दोबारा पैदा करने को मुहाल और मुस्तब्अ़द समझते हैं। **27 :** या'नी मौत के बा'द पैदा किये जाने से।

www.dawateislami.net

تُوَسْوِسُ بِهٖ نَفْسُهٗ ۚ وَنَحْنُ اَقْرَبُ اِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيْدِ ﴿١٦﴾ اِذْ

वस्वसा उस का नफ़्स डालता है[28] और हम दिल की रग से भी उस से ज़ियादा नज़्दीक हैं[29] जब

يَتَلَقَّى الْمُتَلَقِّيٰنِ عَنِ الْيَمِيْنِ وَعَنِ الشِّمَالِ قَعِيْدٌ ﴿١٧﴾ مَا يَلْفِظُ مِنْ

उस से लेते हैं दो लेने वाले[30] एक दाहने बैठा और एक बाएं[31] कोई बात वोह ज़बान से

قَوْلٍ اِلَّا لَدَيْهِ رَقِيْبٌ عَتِيْدٌ ﴿١٨﴾ وَجَآءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ؕ

नहीं निकालता कि उस के पास एक मुहाफ़िज़ तय्यार न बैठा हो[32] और आई मौत की सख़्ती[33] हक़ के साथ[34]

ذٰلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيْدُ ﴿١٩﴾ وَنُفِخَ فِي الصُّوْرِ ؕ ذٰلِكَ يَوْمُ الْوَعِيْدِ ﴿٢٠﴾

येह है जिस से तू भागता था और सूर फूंका गया[35] येह है वा'दए अ़ज़ाब का दिन[36]

وَجَآءَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّعَهَا سَآئِقٌ وَّشَهِيْدٌ ﴿٢١﴾ لَقَدْ كُنْتَ فِيْ غَفْلَةٍ

और हर जान यूं हाज़िर हुई कि उस के साथ एक हांकने वाला[37] और एक गवाह[38] बेशक तू इस से ग़फ़लत

مِّنْ هٰذَا فَكَشَفْنَا عَنْكَ غِطَآءَكَ فَبَصَرُكَ الْيَوْمَ حَدِيْدٌ ﴿٢٢﴾ وَقَالَ

में था[39] तो हम ने तुझ पर से पर्दा उठाया[40] तो आज तेरी निगाह तेज़ है[41] और उस का हम नशीन

28 : हम से उस के सराइर व ज़मा़इर छुपे नहीं। **29 :** येह कमाले इ़ल्म का बयान है कि हम बन्दे के ह़ाल को ख़ुद उस से ज़ियादा जानने वाले हैं, "वरीद" वोह रग है जिस में ख़ून जारी हो कर बदन के हर हर जुज़ में पहुंचता है, येह रग गरदन में है, मा'ना येह हैं कि इन्सान के अज्ज़ा एक दूसरे से पर्दे में हैं मगर **अल्लाह** तआ़ला से कोई चीज़ पर्दे में नहीं। **30 :** फ़िरिश्ते और वोह इन्सान का हर अ़मल और उस की हर बात लिखने पर मामूर हैं। **31 :** दाहनी त़रफ़ वाला नेकियां लिखता है और बाईं त़रफ़ वाला बदियां, इस में इज़्हार है कि **अल्लाह** तआ़ला फ़िरिश्तों के लिखने से भी ग़नी है, वोह अख़्फ़ल ख़फ़िय्यात (बारीक पोशीदगियों) का जानने वाला है, ख़त़राते नफ़्स तक उस से छुपे नहीं, फ़िरिश्तों की किताबत हस्बे इक़्तिज़ाए ह़िक्मत है कि रोज़े क़ियामत नामहाए आ'माल हर शख़्स के उस के हाथ में दे दिये जाएं। **32 :** ख़्वाह वोह कहीं हो सिवाए वक़्ते क़ज़ाए ह़ाजत और वक़्ते जिमाअ़ के, इस वक़्त येह फ़िरिश्ते आदमी के पास से हट जाते हैं। **मस्अला :** इन दोनों ह़ालतों में आदमी को बात करना जाइज़ नहीं ताकि उस के लिखने के लिये फ़िरिश्तों को इस ह़ालत में उस से क़रीब होने की तक्लीफ़ न हो, येह फ़िरिश्ते आदमी की हर बात लिखते हैं, बीमारी का कराहना तक और येह भी कहा गया है कि सिर्फ़ वोही चीज़ें लिखते हैं जिन में अज्रो सवाब या गिरिफ़्त व अ़ज़ाब हो। इमाम बग़वी ने एक ह़दीस रिवायत की है कि जब आदमी एक नेकी करता है तो दहनी त़रफ़ वाला फ़िरिश्ता दस लिखता है और जब बदी करता है तो दहनी त़रफ़ वाला फ़िरिश्ता बाईं जानिब वाले फ़िरिश्ते से कहता है कि अभी तवक़्क़ुफ़ कर शायद येह शख़्स इस्तिग़फ़ार कर ले, मुन्किरीने बअ़्स का रद फ़रमाने और अपने क़ुदरत व इ़ल्म से उन पर ह़ुज्जतें क़ाइम करने के बा'द उन्हें बताया जाता है कि वोह जिस चीज़ का इन्कार करते हैं वोह अ़न्क़रीब उन की मौत और क़ियामत के वक़्त पेश आने वाली है और सीग़ए माज़ी से उन की आमद की ता'बीर फ़रमा कर उस के क़ुर्ब का इज़्हार किया जाता है। चुनान्चे, इर्शाद होता है **: 33 :** जो अ़क़्ल व ह़वास को मुख़्तल व मुकद्दर कर देती है। **34 :** ह़क़ से मुराद या ह़क़ीक़ते मौत है या अम्रे आख़िरत जिस को इन्सान ख़ुद मुआ़यना करता है या अन्जामे कार सआ़दत व शक़ावत और सकरात की ह़ालत में मरने वाले से कहा जाता है कि मौत **35 :** बअ़्स के लिये **36 :** जिस का **अल्लाह** तआ़ला ने कुफ़्फ़ार से वा'दा फ़रमाया था। **37 :** फ़िरिश्ता जो उसे महशर की त़रफ़ हांके। **38 :** जो उस के अ़मलों की गवाही दे। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि हांकने वाला फ़िरिश्ता होगा और गवाह ख़ुद उस का अपना नफ़्स। ज़ह़्ह़ाक का क़ौल है कि हांकने वाला फ़िरिश्ता है और गवाह अपने आ'ज़ाए बदन हाथ पाउं वग़ैरा। ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बरसरे मिम्बर फ़रमाया कि हांकने वाला भी फ़िरिश्ता है और गवाह भी फ़िरिश्ता। (جمل) फिर काफ़िर से कहा जाएगा **: 39 :** दुन्या में **40 :** जो तेरे दिल और कानों और आंखों पर पड़ा था **41 :** कि तू उन चीज़ों को देख रहा है जिन का दुन्या में इन्कार करता था।

www.dawateislami.net

قَرِيْنُهٗ هٰذَا مَا لَدَيَّ عَتِيْدٌ ﴿٢٣﴾ اَلْقِيَا فِيْ جَهَنَّمَ كُلَّ كَفَّارٍ عَنِيْدٍ ﴿٢٤﴾

फ़िरिश्ता[42] बोला येह है[43] जो मेरे पास हाज़िर है हुक्म होगा तुम दोनों जहन्नम में डाल दो हर बड़े नाशुक्रे हटधर्म को

مَّنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ مُّرِيْبِ ﴿٢٥﴾ الَّذِيْ جَعَلَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَاَلْقِيٰهُ

जो भलाई से बहुत रोकने वाला हद से बढ़ने वाला शक करने वाला[44] जिस ने अल्लाह के साथ कोई और मा'बूद ठहराया तुम दोनों

فِي الْعَذَابِ الشَّدِيْدِ ﴿٢٦﴾ قَالَ قَرِيْنُهٗ رَبَّنَا مَآ اَطْغَيْتُهٗ وَلٰكِنْ كَانَ فِيْ

उसे सख़्त अ़ज़ाब में डालो उस के साथी शैतान ने कहा[45] हमारे रब मैं ने इसे सरकश न किया[46] हां येह आप ही

ضَلٰلٍۢ بَعِيْدٍ ﴿٢٧﴾ قَالَ لَا تَخْتَصِمُوْا لَدَيَّ وَقَدْ قَدَّمْتُ اِلَيْكُمْ

दूर की गुमराही में था[47] फ़रमाएगा मेरे पास न झगड़ो[48] मैं तुम्हें पहले ही अ़ज़ाब का

بِالْوَعِيْدِ ﴿٢٨﴾ مَا يُبَدَّلُ الْقَوْلُ لَدَيَّ وَمَآ اَنَا بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿٢٩﴾ ع ٢ ١٤ ١٦

डर सुना चुका था[49] मेरे यहां बात बदलती नहीं और न मैं बन्दों पर ज़ुल्म करूं

يَوْمَ نَقُوْلُ لِجَهَنَّمَ هَلِ امْتَلَاْتِ وَتَقُوْلُ هَلْ مِنْ مَّزِيْدٍ ﴿٣٠﴾ وَ

जिस दिन हम जहन्नम से फ़रमाएंगे क्या तू भर गई[50] वोह अ़र्ज़ करेगी कुछ और ज़ियादा है[51] और

اُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِيْنَ غَيْرَ بَعِيْدٍ ﴿٣١﴾ هٰذَا مَا تُوْعَدُوْنَ لِكُلِّ

पास लाई जाएगी जन्नत परहेज़ गारों के कि उन से दूर न होगी[52] येह है वोह जिस का तुम वा'दा दिये जाते हो[53] हर रुजूअ़ लाने

اَوَّابٍ حَفِيْظٍ ﴿٣٢﴾ ج مَنْ خَشِيَ الرَّحْمٰنَ بِالْغَيْبِ وَجَآءَ بِقَلْبٍ مُّنِيْبِ ﴿٣٣﴾

वाले निगहदाश्त वाले के लिये[54] जो रहमान से बे देखे डरता है और रुजूअ़ करता हुवा दिल लाया[55]

42 : जो उस के आ'माल लिखने वाला और उस पर गवाही देने वाला है। (مدارک وخازن) **43 :** इस का नामए आ'माल (مدارک) **44 :** दीन में **45 :** जो दुन्या में उस पर मुसल्लत था। **46 :** येह शैतान की तरफ़ से काफ़िर का जवाब है जो जहन्नम में डाले जाते वक़्त कहेगा कि ऐ हमारे रब मुझे शैतान ने वरग़लाया, इस पर शैतान कहेगा कि मैं ने इसे गुमराह न किया। **47 :** मैं ने इसे गुमराही की तरफ़ बुलाया इस ने क़बूल कर लिया, इस पर इर्शादे इलाही होगा **अल्लाह** तआ़ला **48 :** कि दारुल जज़ा और मौक़िफ़े हिसाब में झगड़ा कुछ नाफ़ेअ़ नहीं **49 :** अपनी किताबों में और अपने रसूलों की ज़बानों पर मैं ने तुम्हारे लिये कोई हुज्जत बाक़ी न छोड़ी **50 : अल्लाह** तआ़ला ने जहन्नम से वा'दा फ़रमाया है कि इसे जिन्नों और इन्सानों से भरेगा इस वा'दे की तहक़ीक़ के लिये जहन्नम से येह सुवाल फ़रमाया जाएगा **51 :** इस के मा'ना येह भी हो सकते हैं कि अब मुझ में गुन्जाइश बाक़ी नहीं मैं भर चुकी और येह भी हो सकते हैं कि अभी और भी गुन्जाइश है **52 :** अ़र्श के दहनी तरफ़ जहां से अहले मौक़िफ़ उस को देखेंगे और उन से कहा जाएगा **53 :** रसूलों की मा'रिफ़त दुन्या में **54 :** रुजूअ़ लाने वाले से वोह मुराद है जो मा'सियत को छोड़ कर ताअ़त इख़्तियार करे, सईद बिन मुसय्यिब ने फ़रमाया "اوّاب" वोह है जो गुनाह करे फिर तौबा करे, फिर उस से गुनाह सादिर हो फिर तौबा करे और निगाह दाश्त वाला वोह जो **अल्लाह** के हुक्म का लिहाज़ रखे। हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया : जो अपने आप को गुनाहों से महफ़ूज़ रखे और उन से इस्तिग़फ़ार करे और येह भी कहा गया है कि जो **अल्लाह** तआ़ला की अमानतों और उस के हुक़ूक़ की हिफ़ाज़त करे और येह भी बयान किया गया है कि जो ताआ़त का पाबन्द हो, ख़ुदा और रसूल के हुक्म बजा लाए और अपने नफ़्स की निगहबानी करे या'नी एक दम भी यादे इलाही से ग़ाफ़िल न हो, पासे अन्फ़ास करे :

www.dawateislami.net

ادْخُلُوْهَا بِسَلٰمٍ ؕ ذٰلِكَ يَوْمُ الْخُلُوْدِ ﴿۳۴﴾ لَهُمْ مَّا يَشَآءُوْنَ فِيْهَا وَ

उन से फ़रमाया जाएगा जन्नत में जाओ सलामती के साथ[56] येह हमेशगी का दिन है[57] उन के लिये है उस में जो चाहें और

لَدَيْنَا مَزِيْدٌ ﴿۳۵﴾ وَكَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ هُمْ اَشَدُّ مِنْهُمْ بَطْشًا

हमारे पास इस से भी ज़ियादा है[58] और उन से पहले[59] हम ने कितनी संगतें (क़ौमें) हलाक फ़रमा दीं कि गिरिफ़्त में उन से सख़्त थीं[60]

فَنَقَّبُوْا فِي الْبِلَادِ ؕ هَلْ مِنْ مَّحِيْصٍ ﴿۳۶﴾ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَذِكْرٰى لِمَنْ

तो शहरों में काविशें कीं[61] है कहीं भागने की जगह[62] बेशक इस में नसीहत है उस के लिये जो

كَانَ لَهٗ قَلْبٌ اَوْ اَلْقَى السَّمْعَ وَهُوَ شَهِيْدٌ ﴿۳۷﴾ وَلَقَدْ خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ

दिल रखता हो[63] या कान लगाए[64] और मुतवज्जेह हो और बेशक हम ने आस्मानों

وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ۖۗ وَّمَا مَسَّنَا مِنْ لُّغُوْبٍ ﴿۳۸﴾

और ज़मीन को और जो कुछ इन के दरमियान है छ[6] दिन में बनाया और तकान हमारे पास न आई[65]

فَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ وَ

तो उन की बातों पर सब्र करो और अपने रब की ता'रीफ़ करते हुए उस की पाकी बोलो सूरज चमकने से पहले और

قَبْلَ الْغُرُوْبِ ۚ﴿۳۹﴾ وَمِنَ الَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَاَدْبَارَ السُّجُوْدِ ﴿۴۰﴾ وَاسْتَمِعْ

डूबने से पहले[66] और कुछ रात गए उस की तस्बीह़ करो[67] और नमाज़ों के बा'द[68] और कान लगा कर सुनो

اگر تُو پاسداری پاسِ اَنفاس بسُلطانی رَسانَندَت ازیں پاس
تُرا یَک پَند بَس دَر ہَر دو عالم زِجانَت بَر نَیایَد بے خُدا دَم

(तरजमा : "अगर तू अपने सांसों की हि़फ़ाज़त करे तो लोग तुझे इस के सबब बादशाह बना लेंगे, दुन्या व आख़िरत में तेरे लिये येह एक ही नसीहत काफ़ी है। बे हुक्मे ख़ुदा तू सांस भी नहीं ले सकता।")

55 : या'नी इख़्लास मन्द त़ाअ़त पज़ीर सह़ीहुल अ़क़ीदा दिल **56 :** बे ख़ौफ़ो ख़त़र अम्नो इत़्मीनान के साथ, न तुम्हें अ़ज़ाब हो न तुम्हारी ने'मतें ज़ाइल हों। **57 :** अब न फ़ना है न मौत। **58 :** जो वोह त़लब करें और वोह दीदारे इलाही व तजल्लिये रब्बानी है जिस से हर जुमुआ़ को दारे करामत में नवाज़े जाएंगे। **59 :** या'नी आप के ज़माने के कुफ़्फ़ार से क़ब्ल **60 :** या'नी वोह उम्मतें इन से क़वी और ज़बर दस्त थीं। **61 :** और जुस्तजू में जा बजा फिरा किये। **62 :** मौत और हुक्मे इलाही से, मगर कोई ऐसी जगह न पाई। **63 :** दिले दाना। शिब्ली قُدِّسَ سِرُّہٗ ने फ़रमाया कि क़ुरआनी नसाएह़ से फ़ैज़ ह़ासिल करने के लिये क़ल्बे ह़ाज़िर चाहिये जिस में त़र्फ़तुल ऐन (लम्ह़ा भर) के लिये भी ग़फ़्लत न आए। **64 :** क़ुरआन और नसीह़त पर **65 शाने नुज़ूल :** मुफ़स्सिरीन ने कहा कि येह आयत यहूद के रद में नाज़िल हुई जो येह कहते थे कि **अल्लाह** तआ़ला ने आस्मान व ज़मीन और इन के दरमियानी काएनात को छ[6] रोज़ में बनाया जिन में से **पहला** यक्शम्बा (इतवार) है और **पिछला** जुमुआ़, फिर वोह مَعَاذَ اللّٰہ थक गया और सनीचर (हफ़्ता) को उस ने अ़र्श पर लैट कर आराम लिया। इस आयत में उन का रद है कि **अल्लाह** तआ़ला इस से पाक है कि थके, वोह क़ादिर है कि एक आन में सारा आ़लम बना दे, हर चीज़ को ह़स्बे इक़्तिज़ाए ह़िक्मत हस्ती अ़त़ा फ़रमाता है। शाने इलाही में यहूद का येह कलिमा सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को बहुत ना गवार हुवा और शिद्दते ग़ज़ब से चेहरए मुबारक पर सुर्ख़ी नुमूदार हो गई तो **अल्लाह** तआ़ला ने आप की तस्कीन फ़रमाई और ख़िताब हुवा। **66 :** या'नी फ़ज्र व ज़ोहर व अ़स्र के वक़्त **67 :** या'नी वक़्ते

www.dawateislami.net

يَوْمَ يُنَادِ الْمُنَادِ مِنْ مَّكَانٍ قَرِيْبٍ ﴿۴۱﴾ يَّوْمَ يَسْمَعُوْنَ الصَّيْحَةَ

जिस दिन पुकारने वाला पुकारेगा[69] एक पास जगह से[70] जिस दिन चिंघाड़ सुनेंगे[71]

بِالْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ يَوْمُ الْخُرُوْجِ ﴿۴۲﴾ اِنَّا نَحْنُ نُحْيٖ وَنُمِيْتُ وَاِلَيْنَا

हक़ के साथ येह दिन है क़ब्रों से बाहर आने का बेशक हम जिलाएं और हम मारें और हमारी

الْمَصِيْرُ ﴿۴۳﴾ يَوْمَ تَشَقَّقُ الْاَرْضُ عَنْهُمْ سِرَاعًا ؕ ذٰلِكَ حَشْرٌ عَلَيْنَا

तरफ़ फिरना है[72] जिस दिन ज़मीन उन से फटेगी तो जल्दी करते हुए निकलेंगे[73] येह हश्र है हम को

يَسِيْرٌ ﴿۴۴﴾ نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَقُوْلُوْنَ وَمَاۤ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِجَبَّارٍ قف

आसान हम ख़ूब जान रहे हैं जो वोह कह रहे हैं[74] और कुछ तुम उन पर जब्र करने वाले नहीं[75]

فَذَكِّرْ بِالْقُرْاٰنِ مَنْ يَّخَافُ وَعِيْدِ ﴿۴۵﴾ ع

तो कुरआन से नसीहत करो उसे जो मेरी धमकी से डरे

اٰیاتها ۶۰ | ۵۱ سُوْرَةُ الذّٰرِيٰتِ مَكِّيَّةٌ ۶۷ | رکوعاتها ۳

सूरए ज़ारियात मक्किय्या है, इस में साठ आयतें और तीन रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रहम वाला[1]

وَالذّٰرِيٰتِ ذَرْوًا ﴿۱﴾ فَالْحٰمِلٰتِ وِقْرًا ﴿۲﴾ فَالْجٰرِيٰتِ يُسْرًا ﴿۳﴾

क़सम उन की जो बिखेर कर उड़ाने वालियां[2] फिर बोझ उठाने वालियां[3] फिर नर्म चलने वालियां[4]

मग़रिब व इशा व तहज्जुद **68 हदीस :** हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है : सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने तमाम नमाज़ों के बा'द तस्बीह़ करने का हुक्म फ़रमाया। (بخاری) **हदीस :** सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया जो शख़्स हर नमाज़ के बा'द तेंतीस 33 मरतबा "سُبْحٰنَ اللّٰہ" तेंतीस 33 मरतबा "اَلْحَمْدُ لِلّٰہ" तेंतीस 33 मरतबा "اَللّٰہُ اَکْبَر" और एक मरतबा "لَآ اِلٰـہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَاشَرِیْکَ لَہٗ،لَہُ الْمُلْکُ وَلَہُ الْحَمْدُوَھُوَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْر" पढ़े उस के गुनाह बख़्शे जाएंगे चाहे समुन्दर के झागों के बराबर हों या'नी बहुत ही कसीर हों। (مسلم شریف) **69 :** या'नी हज़रते इसराफ़ील عَلَیْہِ السَّلَام **70 :** या'नी सख़्रए बैतुल मक़्दिस से जो आस्मान की त़रफ़ ज़मीन का सब से क़रीब मक़ाम है, हज़रते इसराफ़ील की निदा येह होगी : ऐ गली हुई हड्डियो ! बिखरे हुए जोड़ो ! रेज़ा रेज़ा शुदा गोश्तो ! परागन्दा बालो ! **अल्लाह** तआ़ला तुम्हें फ़ैसले के लिये जम्अ़ होने का हुक्म देता है। **71 :** सब लोग। मुराद इस से नफ़्ख़ए सानिया (दूसरी मरतबा सूर फूंका जाना) है। **72 :** आख़िरत में। **73 :** मुर्दे मेह़शर की त़रफ़। **74 :** या'नी कुफ़्फ़ारे कुरैश। **75 :** कि उन्हें बज़ोर इस्लाम में दाख़िल करो, आप का काम दा'वत देना और समझा देना है। (وکان ھذاقبل الامربالقتال)
1 : सूरए ज़ारियात मक्किय्या है, इस में तीन रुकूअ़, साठ आयतें, तीन सो साठ कलिमे, एक हज़ार दो सो उन्तालीस ह़र्फ़ हैं। **2 :** या'नी वोह हवाएं जो ख़ाक वग़ैरा को उड़ाती हैं। **3 :** या'नी वोह घटाएं और बदलियां जो बारिश का पानी उठाती हैं। **4 :** वोह कश्तियां जो पानी में ब सहूलत चलती हैं।